सुनीति कुमार चटर्जी

सुकुमार सेन

MT
415.092
C 392 S

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
415.092
C 392 S

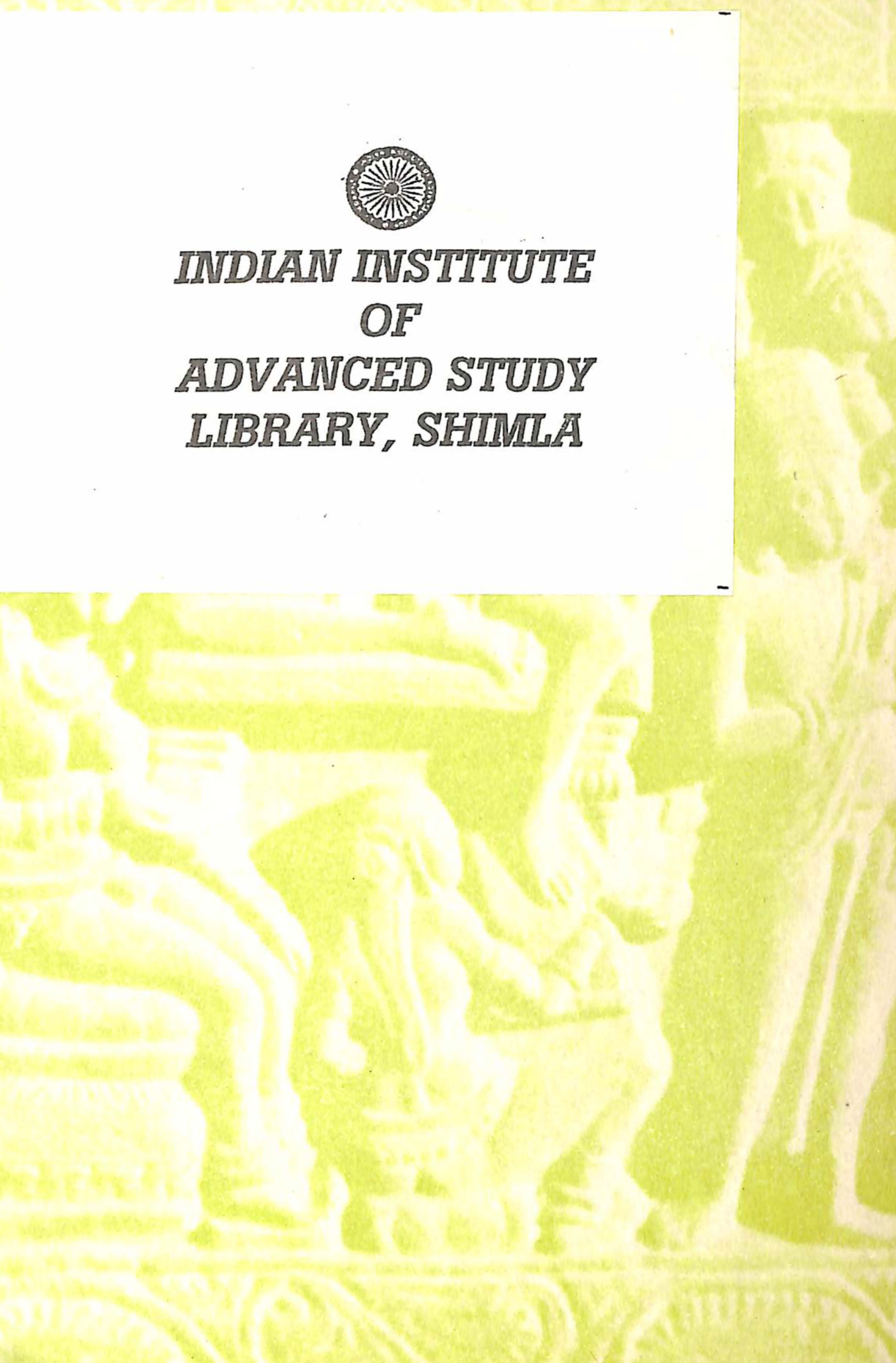

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

सुनीति कुमार चटर्जी

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दंरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कए रहल छथि । हिनका लोकनिक नीचामे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कए रहल छथि । भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक ।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

सुनीति कुमार चटर्जी

लेखक

सुकुमार सेन

अनुवादक

नवीन चौधरी

साहित्य अकादेमी

Suniti Kumar Chatterjee : Maithili translation .by Navin Choudhary of Sukumar Sen's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1992), **SAHITYA AKADEMI**
REVISED PRICE Rs. 15.00

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 1992

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 2

डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता

304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेट,

172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग,

दादर, बम्बई 400 014

109, जे. सी. मार्ग, बंगलौर 560 002

Library IIAS, Shimla
MT 415.092 C 392 S
00117170

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

ISBN 81-7201-325-6

Indian Institute of Advanced Study
117170
10/12/04
SHIMLA

लेज़रसैटिंग : वैलविश पब्लिशर्स
पीतमपुरा, दिल्ली 110 034

मुद्रक : विमल ऑफ़सैट
दिल्ली 110 032

MT
415.092
C 392 S

अनुक्रम

देश विदेश मे	7
राजनीतिक धारा लग	10
राष्ट्रीय प्राध्यापक	14
पाण्डित्य	17
विद्वान आ अध्यापक	19
उपलब्धि	21
शिशिर भादुड़ीक संग	29
बंगला लेखक	33
विद्वान आ शिक्षाविद	36
किं बहुना	38

देश विदेश मे

1928 सँ 1934 अवधि मे चटर्जी 'ठमकल' रहलाह । विश्वविद्यालय मे अध्यापनक अतिरिक्त हुनक काज छल विद्वत्सम्मेलन सभ मे व्याख्यान देब आ बंगीय साहित्य परिषद् पत्रिका, विश्वभारती त्रैमासिक, जित्सक्रिफ्ट फर इण्डोलोग्ते अंड इरानिस्तिक, जर्नल आफ दी एशिएटिक सोसायटी, इण्डियन लिंग्विस्टिक्स, माडर्न रिव्यू आदि पत्रिका मे निबंधादि लिखब । 1927-28 मे दू टा पोथी छपल; एक टा बंगला ध्वनि विज्ञान पर, दोसर बंगला मे विदेशी सभक लेल गाइड बुक ।

चटर्जी पिताक संग रहैत छलाह । अपन बढैत परिवार लेल ओ पुश्तैनी घर आब ओछ होइत छलनि । दक्षिण कलकत्ता मे जमीन किनलनि आ घर बनौलनि । घर बास लेलनि 1933 मे । घरक नाम देलनि "सुधर्मा" (पुराण मे देवगणक सभाक नाम) । चटर्जीक विलक्षण पुस्तकालय आ कला संग्रह एतहि (16, हिन्दुस्तान पार्क, कलकत्ता 700029) ।

सुनीति कुमार लन्दन मे द्वितीय ध्वनि विज्ञान अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनक अवसर पर 1935 मे दोसर खेप यूरोप गेलाह । ओ सम्मेलन मे कलकत्ता विश्वविद्यालयक प्रतिनिधित्व आ भारतीय अनुभागक अध्यक्षता कएलनि । लन्दन मे सम्मेलन समाप्तिक बाद चटर्जी फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी आ चेकोस्लोवाकियाक यात्रा कएलनि । बर्लिन विश्वविद्यालयक ओरिएण्टल इंस्टीच्यूट मे ओ व्याख्यान देलनि । यात्राक विवरण हुनक डायरी मे छनि जे 1938 मे प्रकाशित भेल ।

1936-37 क शीतकाल मे रंगून मे अखिल बर्मा बंगला साहित्य सम्मेलनक अध्यक्षता करबा ले हुनक बजाहटि भेल । बर्मा मे ओ

पेगू, तोर्यु, पिम्मेनो, पैगन आ माण्डलेक सेहो यात्रा कएलनि ।

1938 मे चटर्जी तेसर खेप यूरोप गेलाह् । हुनका संग विद्यार्थी जीवनक मित्र मेजर पी. बर्धन छलाह् । अवसर छल घेण्ट मे तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान कांग्रेस मे कलकत्ता विश्वविद्यालयक प्रतिनिधित्व आ ब्रुसेल्स मे इण्टरनेशनल कांग्रेस ऑफ ओरिएण्टलिस्ट्स । ओ 26 जून 1938 के कलकत्ता सँ बम्बई लेल प्रस्थान कए 29 के यूरोप ले स्टीमर मे सवार भेलाह् । जेनेवा मे स्टीमर छोड़ि नेपल्स, जेनेवा, मिलान, लाउसोना जेनेवा आ पेरिस होइत 17 जुलाई कैँ घेण्ट, बेल्जियम जुमलाह् । सम्मेलन मे 21 जुलाई कैँ चटर्जी वाग्ध्वनिक विकास पर पत्र पाठ कएलनि । ओस्टेण्ड ओ डोंवर होइत 23 जुलाई कैँ लन्दन आबि गेलाह् आ सात दिनक बाद डेनमार्क लेल प्रस्थान कएलनि । कोपेनहेगेन (31 जुलाई-6 अगस्त) मे इण्टरनेशनल कांग्रेस आफ एंथ्रोपोलोजिस्ट्स मे भाग लैत ओस्लो गेलाह् । नार्वे सँ 7 कैँ विदा भए 5 दिन स्टाकहोम मे बिलमि गेलाह् । तकर बाद फिनलैण्ड, जर्मनी, पोलैण्ड होइत ब्रुसेल्स (बेल्जियम) सम्मेलन मे भाग लैत इटली बाटे भारत आपस भेलाह् ।

1939-47 अवधि मे चटर्जी ठमकल रहलाह् । पूर्वी बंगाल (आब बंगला देश) कोमिल्ला मे अखिल बंग बंगला साहित्य सम्मेलनक वार्षिक सत्रक अध्यक्षता कएलनि । 1940 मे गुजरात वर्नाकुलर सोसायटी. (आब गुजरात विद्या सभा) स्नातकोतर आ शोध विभाग मे हुनका व्याख्यान देबाक निमंत्रण भेटलनि । ओ हिन्दी भाषाक ऐतिहासिक विकास पर आठ व्याख्यान देलनि । ओ व्याख्यान सभ अहमदाबाद सँ 'इण्डो-आर्यन एण्ड हिन्दी' (1942) नामे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल । "ओरिजिन एण्ड डेवलपमेण्ट आफ द बेंगाली लैंग्वेज" (1926) क बाद भारतीय भाषा विज्ञान कैँ चटर्जीक ई श्रेष्ठ सनेस भेल ।

1946 मे ओ कराची, सिन्ध मे 34 म अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक राष्ट्रभाषा अनुभागक अध्यक्षता कएलनि । 1947 मे असम सरकारक अनुरोध भेल प्रतिभा देवी फाउण्डेशन

लेल किछु व्याख्यान देबाक । ओ बजलाह् भारतीय संस्कृति (असमक विशेष सन्दर्भ मे) केर विकास मे मंगोल समाजक योगदान पर ।

चटर्जी चारिम खेप यूरोप गेलाह् 1948 मे । जुलाई मे पेरिस मे आयोजित इण्टरनेशनल कांग्रेस आफ ओरिएण्टलिस्ट्स आ इण्टरनेशनल कांग्रेस आफ लिंग्विस्टिक्स मे कलकत्ता विश्वविद्यालय आ भारत सरकारक प्रतिनिधि नियुक्त भेलाह्; अगस्त मे ब्रूसेल्स मे इंटरनेशनल कांग्रेस आफ एंथ्रोपोलोजिस्ट्स मे सेहो छलाह् । घरमुहाँ होइत एक सप्ताह (सितम्बर 48) लेल कैरो मे बिलमि गेलाह् ।

दिसम्बर 49 मे चटर्जी पाँचम खेप यूरोप गेलाह् पेरिस (दिसम्बर 49 आ मार्च 50) मे ब्रेल वर्णमाला पर यूनेस्को सम्मेलन मे । ओ इटली, इंगलैण्ड, हालैण्ड आ टर्की (इस्ताम्बुल) कलकत्ता विश्वविद्यालय (जनवरी 50) दिस सँ शैक्षणिक जिज्ञासा दौरा मे गेलाह् ।

फरवरी 51 मे चटर्जी बेरुत, लेबनान मे अरबी आ फारसी ब्रेल पर यूनेस्को सम्मेलन मे भाग लेलनि । ओ दमिश्क सेहो गेलाह् ।

यूनाइटेड स्टेट्स आफ अमेरिका मे चटर्जी विजिटिंग प्रोफेसरक रूप मे आमंत्रित भेलाह् । पेन्सिलवार्निया विश्वविद्यालय (फिलाडेल्फिया) मे स्कूल आफ साउथ एशिया स्टडीज सँ सम्बद्ध छलाह् । ओ कोलम्बिया विश्वविद्यालय (न्यू यार्क) येल विश्वविद्यालय (न्यू होवेन) आ वाशिंगटन मे सेहो व्याख्यान देलनि । राकफेलर फाउण्डेशन न्यू यार्कक तत्त्वावधान मे एक मास लेल मेक्सिको भ्रमण कएलनि । पेरिस मे ब्रेल पर दोसर यूनेस्को सम्मेलन मे भाग लेलनि । ओ 31 मार्च कैं भारत आपस भेलाह् ।

राजनीतिक धारा लग

चटर्जी कैँ किछु मित्र आ प्रशंसक स्वतंत्र उमीदवारक रूप मे पश्चिम बंगाल विधान परिषद लेल चुनाव मे ठाढ होएबाक अनुरोध कएलनि । विधान परिषदक (फरवरी 1953) अध्यक्ष ओ बनलाह निर्विरोध । विश्वविद्यालय सेवा सँ तखन ओ त्यागपत्र देलनि । अहमदाबाद (अक्तूबर-नवम्बर 1953) मे "आल इण्डिया ओरिएटल कांफ्रेंसक" मा सत्रहम सत्रक अध्यक्षता कएलनि ।

"भारतक इतिहास आ सभ्यता मे असमक स्थान" पर गौहाटी विश्वविद्यालय मे वाणीकान्त काकती स्मारक व्याख्यानमाला मे 1954 मे व्याख्यान देलनि ।

चटर्जी कैँ पश्चिम अफ्रीका (मिस्त्र आ लिबिया होइत) – गोल्ड कोस्ट (आब घाना) नाइजिरिया आ लाइबेरिया तीन सप्ताह (जुलाई-अगस्त 1954) धरि भ्रमणक अवसर भेटलनि । भ्रमणक आयोजन कएलक इंडियन काउसिल फोर कल्चरल रिलेसन्स, न्यू देलही । अफ्रीका भ्रमणक बाद ओ शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार केर प्रतिनिधिक रूप मे इंगलैण्ड गेलाह कैम्ब्रिज (अगस्त 54) मे तैसम इंटरनेशनल कांग्रेस आफ ओरिएण्टलिस्ट्स मे भाग लेमए ।

ओही साल अक्तूबर-नवम्बर मे मेडन, उत्तरी सुमात्रा मे इंडोनेशिया सरकार द्वारा आहूत इंडोनेशियायी भाषा पर कांग्रेस सत्र मे भाग लेमए गेलाह इंडोनेशिया । ओहि मे भारत सरकारक प्रतिनिधित्व कएलनि । भारत आपस होएबाक बाट मे ओ बेंकाक गेलाह (दिसम्बर' 54) । ओही साल बम्बई विश्वविद्यालय मे विलसन फिलोलाजिकल लेक्चर्सक रूप मे डेवलपमेण्ट आफ मिड्लइण्डो आर्यन पर देलनि पांच टा व्याख्यान ।

जनवरी' 55 मे चटर्जी कैँ भारतक राष्ट्रपति द्वारा पद्मभूषण

आ नओ सालक बाद (जनवरी' 63) मे पद्म विभूषण सँ अलंकृत कैल गेल ।

1955 क ग्रीष्म आ तकर बाद साले साल चटर्जी पूना, अन्नामलैनगर, मैसूर, कोयम्बटूर, सागर आ मदुरै मे आयोर्जित समर स्कूल्स ऑफ लिंग्विस्टिक्स मे व्याख्यान दैत रहलाह । लिंग्विस्टिक्स सोसायटी आफ इण्डिया आल इंडिया ओरिएण्टल कांफ्रेस संयुक्त अधिवेशन मे 1956 मे अन्नामलैनगर मे हुनका सम्मान मे विश्व भरिक विद्वान सभक लिखलनिबंधक एक खंड हुनका समर्पित कएलक ।

पेकिंग विश्वविद्यालय आ पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइनाक संयुक्त आमंत्रण पर भारतीय विश्वविद्यालय केर प्रतिनिधि मण्डलक रूप मे चटर्जी सितम्बर-अक्तूबर' 56 मे दू मास लेल चीन भ्रमण कएलनि— हांगकांग, कैंटोन, पेकिंग, शेनयांग (मुक्देन), अन-शान, फू-शान, नानकिंग, शाघाई, हांगोहो । एहि मे सँ किछु ठाम ओ सांस्कृतिक विषय सभ पर व्याख्यान देलनि । 1955-56 मे राजभाषा आयोग आ 1956-57 मे संस्कृत आयोगक क्रमशः सदस्य आ अध्यक्षक रूप मे साक्ष्य संग्रह लेल समस्त भारत भ्रमण कएलनि । पहिल आयोग मे ओ बहुमत सँ सहमत नहि भेलाह, अपन फराक 'अल्पमत' रिर्पोट देलनि ।

1956 मे प्रादेशिक विधान परिषदक चुनाव मे चटर्जी फेर चुनल गेलाह, आ फेर विधान परिषदक निर्विरोध अध्यक्ष चुनल गेलाह । सोवियत एकेडमी आफ साइंसेज केर अतिथि बनि कए सितम्बर-नवम्बर' 58 मे सोवियत रूस गेलाह । मास्को आ लेनिनग्राद मे व्याख्यान देलनि; मास्को मे आयोजित स्लैविस्ट सभक चारिम अन्तर्राट्रीय सम्मेलन मे महत्त्वपूर्ण शोधपत्रक पाठ कएलनि । ओही साल चीन-भारत मैत्री संघक अतिथिक रूप मे तीन सप्ताह लेल फेर चीन भ्रमण कएलनि । 1959 मे चटर्जी अपन पदक हैसियत सँ आस्ट्रेलिया गेलाह । भारतक प्रतिनिधि रूप मे कैनबेरा मे आयोजित कामनवेल्थ संसदीय सम्मेलन मे भाग लेलनि । घुरती काल फेर इण्डोनेशिया मे जकार्ता आ थाइलैण्ड मे बैंकाक गेलाह ।

1960 मे चटर्जी यूरोप मे व्याख्यान आ अध्ययन क दौरा मे आमंत्रित भेलाह । कैरो, रोम, प्राग, बॉन, पेरिस, लन्दन आ एम्सटरडम (जून आ जुलाई) ओ सपत्नीक गेलाह । तकर बाद लगले (अगस्त 9-16) ओहि ठाम पचीसम इण्टरनेशनल कांग्रेस आफ ओरिएण्टलिस्ट्स मे भारत सरकारक प्रतिनिधि मण्डलक नेतृत्व करबा लेल हुनक बजाहटि भेल मास्को । ओहि ठाम ओ सामान्य आ काउकेशियन अनुभाग मे दू टा नमहर शोधपत्र पढ़लनि । कांग्रेसक बाद चटर्जी भ्रमण कएलनि बाह्य मंगोलिया (उलान बतोर, इर्देनित्जु आ खोको-सैदम) । उलान बतोर मे गंडम मठ मे मंगोल जनगण कैं नेगापतम सँ सातम शताब्दीक काँस्य बुद्ध भारत सरकार दिसि सँ सनेस देलनि । मठ कैं आ मंगोलिया मे आन आन संस्थान कैं अपन सरकार दिस सँ पोथी सेहो देलनि ।

रोम विश्वविद्यालय द्वारा चटर्जी कैं ओनोरिस काउसा (मानद) डाक्टर ऑफ लेटर्स उपाधि देल गेलनि । उपाधि ग्रहण करे ओ रोम (मार्च 1961) गेलाह । घरमुहाँ बाट मे तेहरान जा कए ओहि ठामक विश्वविद्यालय मे 'इरानियनिज्म' पर शोध पत्र पाठ कएलनि ।

1962 मे चटर्जी विश्व भ्रमण वा परिक्रमण कएलनि । अगस्त मे डबलिन गेलाह । ओ नवम अन्तर्राष्ट्रीय भाषाशास्त्रीय कांग्रेस (मासाचुसेत्स तकनीकी संस्थान हर्वर्ड विश्वविद्यालय, भाषाशास्त्रक स्थायी अन्तर्राष्ट्रीय समिति एवं अन्य संस्था सभ द्वारा आयोजित) मे भाग लेलनि । ओ एकटा शोधपत्र पढ़लनि, एकटा सत्रक अध्यक्षता केलनि । अमेरिका के धाङलनि हजार द्वीपक पार्क, फिलाडोल्फिया, साल्ट लेक सिटी आ बर्कले, कैलिफोर्निया' । तखन ओ आबि गेलाह हवाई जतए पाँच दिन लेल होनोलूलू विश्वविद्यालयक अतिथि छलाह । हवाई सँ ओ गेलाह जापान, ओतए ओसाका, कायटो, टोकियो विश्वविद्यालय आ किछु अन्य संस्थान मे व्याख्यान देलनि; कायटो, नारा आ इज मे महत्त्वपूर्ण शिंतो आ बौद्ध मठ-मन्दिर सभ मे गेलाह । फिलीपिन्स विश्वविद्यालयक अतिथिक रूप मे ओ मनीलाक यात्रा कएलनि । एतए ओ व्याख्यान देलनि आ विश्वविद्यालय मे फैकल्टी आफ लिंग्विस्टिक्सक संग सिम्पोजियम केर

आयोजन कएलनि ।

वर्षान्त मे ओ तेसर खेप विधान परिषद सदस्य आ तखन अध्यक्ष निर्वाचित भेलाह । नेपाल नरेशक अतिथिक रूप मे विशेष निमंत्रण पर ओ '63 क ग्रीष्म मे काठमाण्डू, नेपाल गेलाह । ओ अवसर छल जीवनी समिति द्वारा नरेश कैँ उपहार ।

मई-जून '64 मे चटर्जी फेर सोवियत लैण्ड गेलाह आ कवि, कैन्येव आ शेवचेंको आ मोरिंत्सी मे तरस शेवचेंको 150 म जयन्ती मे शामिल भेलाह । ओ लिथुएनिया मे विल्नियस आ लैतिवा मे रीगा सेहो गेलाह । मास्को (जून 1964) मे एशियन आ अफ्रिकन लेखक सम्मेलन मे भाग लेलनि ।

राष्ट्रीय प्राध्यापक

चटर्जी कैँ जखन ह्यूमेनिटिज मे भारतक राष्ट्रीय प्राध्यापक नियुक्त कैल गेल तखन ओ रूस भ्रमण कए रहल छलाह ।

अक्तूबर' 64 मे महारानी एलिजाबेथ द्वारा ब्रितानी संसदक सत्रारंभ देखबा लेल लन्दन मे छलाह । किंग्सटन मे कामनवेल्थ पार्लियामेण्टरी एसोशिएसन्स कांफ्रेंस मे भारत सरकार (पश्चिम बंगाल) प्रतिनिधि मण्डलक सदस्य रूप मे जमाइका गेलाह । ओ नवम्बर मे हैती मे पोर्ट-आउ प्रिंस सेहो गेलाह ।

पश्चिम बंगाल विधान परिषद केर अध्यक्ष पद सँ 8 फरवरी 1965 कैँ इस्तीफा दए ह्यूमेनिटिज मे भारतक राष्ट्रीय प्राध्यापक पद ग्रहण कएलनि । 29 मई 1977 सँ आमरण एहि राष्ट्रीय पद कैँ ओ सुशोभित कएलनि ।

मार्च-मई 1966 मे भारत सरकारक शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रायोजित मित्र देश सभक संग सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम मे चटर्जी व्याख्यान भ्रमण कएलनि—कैरो, एडिस अबाबा, एथेंस, बुखारेस्ट, पेरिस, लन्दन, प्राग, पूर्वी बर्लिन, मास्को, रीगा, विल्निस आ इरेवान । एहि सभ स्थान मे ओ विश्वविद्यालय एवं अन्य संस्थान मे व्याख्यान देलनि । ओही सालक शरद मे तेहरान मे आयोजित वर्ल्ड कांग्रेस आफ इरानोलोजिस्ट्स मे इरान सरकार दिस सँ आमंत्रित भेलाह आ एकटा महत्त्वपूर्ण शोधपत्र ओतए पढलनि जे पछाति एशिएटिक सोसायटी कलकत्ता सँ प्रकाशित भेल । ओ इस्पाहान, शिराज, पर्सेपोलिस आ नक्श-इ-रुस्तम भ्रमण कएलनि । जार्जियाक राष्ट्र कवि स्लोथा रूस्थवेली केर आठम शतवार्षिकी मे ओ भाग लए ओहि अवसर पर रुस्थवेलीक महान रचना "वेफाखिस-काओसानी" (बाघम्बर मे लोक) पर शोधपत्र पाठ कएलनि । ओ दोसर खेप इरेवन

जा कए भारत आर्मेनियन व्यापार सम्बन्धी सत्रहम शताब्दीक प्राचीन आर्मेनियन दस्तावेज क मादे मेतेनादारान मे विद्वद्‌गण सँ भेंट कएलनि ।

अगस्त 1967 मे चटर्जीकँ एन आर्बर मिचिगन (यू. एस. ए.) मे सताइसम ओरिएण्टलिस्ट्स मे हकार छलनि । अमेरिका सँ यूरोप जा कए बुखारेस्ट, रोमानिया मे भाग लेलनि दसम अन्तर्राष्ट्रीय भाषाशास्त्र सम्मेलन मे ।

जनवरी 68 मे चटर्जी मद्रास मे उपस्थित छलाह तमिल अध्ययनक दोसर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे ।

1968 क बाद जखन ओ 81 सालक भेलाह तखन भारतक बाहर नहि जाथि । दक्कन कालेज, पूना आ लिंग्विस्टिक सोसायटी आफ इण्डियाक साझी तत्त्वावधान मे पूना मे आयोजित पहिल अखिल भारतीय भाषाशास्त्रीय सम्मेलन (दिसम्बर 1970) केर अध्यक्षता कैल । जून 1971 मे चटर्जी त्रिवेन्द्रम मे द्रविड़ भाषा शास्त्रक पहिल सम्मेलनक उद्‌घाटन कएलनि, एवं ओही साल अगस्त मे कनाडा गेलाह । ओतए माण्ट्रियल मे ध्वनि विज्ञानक सातम अतर्राष्ट्रीय कांग्रेस मे एकटा शोधपत्र पाठ केलनि । ओहि ठाम कांग्रेसक सगठन समितिक उपाध्यक्ष चुनल गेलाह । दू मासक बाद इरान सरकारक हकार भेटलनि । महान साइरस द्वारा अकेमेनीय राजवंशक स्थापनाक 2500 म शतवार्षिकी समारोहक अवसर पर । ओ जे व्याख्यान ओहि ठाम देलनि पछाति ओकर विस्तार कए प्रकाशन लेल प्रस्तुत भेल । अप्रिल 1974 मे टेम्पल्टन फाउण्डेशनक सदस्यक रूप में ओ लन्दन गेलाह आ ओही साल दिसम्बर मे ढाका गेलाह । बंगला भाषा-साहित्य कैँ हुनक अवदान लेल एशिएटिक सोसायटी, बंगलादेश द्वारा प्रदत्त स्वर्ण पदक पुरस्कार लेल । जून 1975 मे ओ संस्कृत अध्ययन लेल दोसर अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस मे भाग लेलनि ।

दिसम्बर 1975 मे दोसर अन्तर्राष्ट्रीय रामायण संगोष्ठी भेल । रामायण पर चटर्जी हठात् व्याख्यान देलनि । एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता मे आयोजित एकटा बैसार मे 15 जनवरी 1976 कैँ रामायण समस्या पर व्याख्यान देलनि ।

ओहि साल फरवरी मे नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता मे रामायण पर एकटा संगोष्ठी आयोजित कएलक साहित्य अकादमीक क्षेत्रीय शाखा । चटर्जी एहि मे व्याख्यान देलनि । हुनक इच्छा छलनि महाकाव्य पर पोथी लिखबाक । किन्तु आँखि कमजोर होएबाक बाधा छलनि । दिल्ली आ कलकत्ता मे रामायण पर ओ जे व्याख्यान देलनि से हुनक मरणोपरांत प्रकाशित भेल ।

जनवरी 1977 मे कलकत्ता मे साहित्य अकादमीक क्षेत्रीय शाखा मे आयोजित 'पूर्व भारतीय साहित्य मे उपन्यास' पर संगोष्ठी केर उद्घाटन कएलनि । इएह रहल चटर्जीक अन्तिम सार्वजनिक समारोह ।

पाण्डित्य

रोम (1961), दिल्ली (1965), विश्वभारती (1966), उस्मानिया (1968), आ कलकत्ता (1969) आदि किछु विदेशी आ भारतीय विश्वविद्यालय सभ द्वारा हुनका डाक्टरक डिग्री (ओनोरिस काउसा) केर सम्प्रदान द्वारा सुनीति कुमार चटर्जीक पाण्डित्य महत्त्वपूर्ण रूप सँ स्वीकृत भेल । फेलो, मानद सदस्य, उपाध्यक्ष वा अध्यक्ष निर्वाचित कए हुनका देश आ विदेश मे उच्च वाङमय संस्था सभ सम्मानित कएलक । चटर्जी 1936 मे एशियाटिक सोसायटी (बंगाल) केर फेलो निर्वाचित भेलाह । 1938 मे ओ 'कमिते इण्तरनाशनल पर्मानेण्त डो लॉग्विस्ट्स' क सदस्य बनओल गेलाह । ओ निम्नलिखित संस्थाक मानद सदस्य निर्वाचित भेल छलाहः ओरिएण्टल इंस्टीच्यूट आफ पोलैण्ड (1938), 1946 मे सोसायते एशियातिक (पेरिस), 1947 मे अमेरिकन ओरिएण्टल सोसायटी, 1949 मे एकोले फ्राँस्वा दो लेकसत्रीम ओरियाँत (सैगोन, पेरिस), 1950 मे प्रोविंसियल यूट्रेक्ट्स जेनुत्सचैप वैन कुंस्तेन आन वेतेन्स चैपेन (हालैंड), 1954 मे नाव्रेजियन एकेडमी आफ साइंसेज (ओस्लो, नार्वे), 1957 मे स्याम सोसायटी (बेंकाक), 1958 में लिंग्विस्टिक सोसायटी आफ अमेरिका, 1961 मे इटैलियन इंस्टीच्यूट आफ दी नियर एण्ड फार इस्ट (रोम) 1961 मे परमानेण्ट इंटरनेशनल काउंसिल आफ फोनेटिक साइंसेज (हेलसिंकी), 1963 मे सिलोन लिंग्विस्टिक सोसायटी आदि ।

चटर्जी निम्नलिखित एकेडमी आ सांस्कृतिक संस्थाक अध्यक्ष निर्वाचित भेल छलाहः स्नातकोतर कला परिषद, कलकत्ता (दू खेप 1953-55 आ 70-72), इण्टरनेशनल फोनेटिक एसोसिएशन (1969) मे अपन अध्यापक प्रोफेसर टैनियल जोन्स, संस्थापक अध्यक्षक उत्तराधिकारी । देश आ विदेशक विश्वविद्यालय एवं अन्य

विद्या संस्था सभ सँ ओ अनेक पदक, प्रशस्ति आ प्रमाण पत्र, ओनोरिस काउसा ग्रहण कएलनि । साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक फरवरी 1968 मे उपाध्यक्ष आ 1969 मे अध्यक्ष निर्वाचित भेलाह । चटर्जीक देहावसान 87 सालक वयस मे भेलनि, तखन हुनका पर ह्यूमेनिटिज केर राष्टीय प्राध्यापक आ साहित्य अकादमी केर अध्यक्ष दूनू पद भार छलनि । आर किछु साल ओ जीबि सकैत छलाह । हुनक निधन प्रायः दुखान्त भेल — मोतियाबिन्दक सफल आपरेशनक किछु दिनक बाद हठात् हृदय गति ठमकि गेलनि ।

विद्वान आ अध्यापक

सुनीति कुमार चटर्जी गंभीर विद्वान आ सुजाग्रत पुरुष छलाह, मुदा शिक्षा जगतक जानल टाइप मे नहि छलाह । ओ सुपाठक छलाह, मुदा पोथी कीट नहि । ओ पेशा आ स्वेच्छा सँ अध्यापक छलाह, मुदा कक्षा सभ मे हरसट्ठे प्रभावी नहि होथि । सदिखन हुनक आँखि मुद्रित पातक बाहर पढबा लेल किछु हेरैत छल आ कक्षाक चारि देबालक बाहर पढौनी हुनका नीक लगैत छलनि । मानसिक क्रिया कलापक अतिरिक्त हुनक गतिविधि साबित करैछ जे चटर्जी जे आश्रम वासी मुनि सन नहि, भ्रमणशील (चरक) ऋषि सन छलाह । सीखब ओ कहिओ नहि छोड़लनि, वास्तविक विद्वान कहिओ नहि छोड़ैत अछि । मानव जे कैने अछि आ एखन करैत अछि से बुझबाक भूख छलनि हुनका । यैह भूख हुनका तेना चंचल कैने रहैत छल जे ओ विदेश जेबा ले उताहुल रहैत छलाह । एहि आर्ष आचरण सँ संभवतः हुनक अनुसंधान तत्परता मे भाषाशास्त्रीय शोध मे बाधा होइत छल, किन्तु बीसम शताब्दीक मध्य मे हुनका अक्षर जगतक एकटा अद्‌भुद व्यक्तित्व बना देलक — भारतीय मनीषा आ संसकृति केर वास्तविक राजदूत । सर्व पल्ली राधाकृष्णन क ओ परम प्रशंसक छलाह आ राधाकृष्णन कैँ सेहो ओ नीक लगैत छलथिन । ई उचिते छल जे संस्कृति आ मनीषाक प्रसार मे भ्रमण करबामे ओ चटर्जी ओहि विख्यात दार्शनिक कैँ पाछा छोड़ि देलनि । साहित्य आ चिन्तन लेल जे टैगोर कएलनि भाषाशास्त्र, ध्वनि विज्ञान आ संस्कृति लेल सैह कएलनि चटर्जीः ओ दूनू पूरब आ पश्चिम कैँ लग आनइ मे योगदान कएलनि ।

कलकत्ता विश्वविद्यालयक कक्षा सभ मे चटर्जी बहुत सफल अध्यापक नहि छलाह, औसत छात्र हुनक व्याख्यान नीक जकाँ नहि

बुझि पबैत छल । दोसर शब्द मे विद्यार्थीसभ लेल निर्धारिते वस्तु देबाक बन्हेज ओ नहि गछलनि — विद्यार्थी कैँ नीक अंक प्राप्त करबा मे सहायक होएबाक बन्हेज । कक्षाक बाहर चटर्जी 'युनिवर्सिटी प्रोफेसर' छलाह । किछुए नीक अनुसंधानकर्ता आ जिज्ञासु एहि विद्या निर्झर लग ज्ञान पिपासा शान्त करैत छलाह । कलकत्ता विश्वविद्यालय मे सेवा अवधि समाप्त होएबा सं किछु पहिनहि चटर्जी त्यागपत्र दए मने एकटा राजनीतिक पदभार गछलनि । चटर्जी राजनीतिज्ञ नहि छलाह आ राजनीतिक नियुक्ति पसिन नहि करैत छलाह । एकटा मित्र कैँ ओ कहलनि जे ई पद स्वीकार करबाक कारण भेल विश्व विद्यालय सेवा मे अपन अवधि बढाओल जेबा दिसि ओ निश्चिन्त नहि छलाह । संभवतः हुनक इच्छा छलनि राधाकृष्णन केर पद चिह्नक अनुसरण करब ।

उपलब्धि

ओरिजिन एण्ड डेवलपमेण्ट आफ दी बेंगाली लैंग्वेजक प्रकाशित (1926) होएबाक दिन सँ सुनीति कुमार चटर्जी भारतीय भाषाशास्त्र मे प्रमुख भारतीय गण्य भए गेलाह । आङ्ल भाषाक हुनक गंभीर ज्ञान, महापण्डित डैनियल जोन्स लग लन्दन मे ध्वनि विज्ञानक प्रशिक्षण, भाषाशास्त्रक शीर्षस्थ पण्डित लोकनिक लन्दन आ पेरिस मे व्याखान सूनब – ई सभ हुनका अद्भुत युवा मनीषी बना देलक । फारसी (आ अरबी) केर पर्याप्त ज्ञान छलनि, प्रमुख आर्य भारतीय आ द्रविड़ भाषा मे अधिकांशक ज्ञान हुनका एहेन निष्णात विद्वान बना देलक जे ओ प्राचीन आ नवीन भारतीय भाषा सभक इतिहास पर विश्वासपूर्वक बाजि सकैत छलाह । यूरोपक भाषा सभ मे फ्रेंचक खूब नीक आ जर्मन केर साधारण ज्ञान छलनि । ओ इताली, स्पैनिश, किछु आनो भाषा ओकर विशेष अवगतिक अभावहु मे मातृ-भाषा जकाँ बाजि सकैत छलाह । चीनी भाषा सेहो सिखलनि ।

ओना चटर्जी कैं मृतभाषा सँ बेसी रुचि जीवित भाषा मे छलनि । यैह कारण भेल जे ध्वनि विज्ञान हुनका बेसी प्रिय । हुनक आरंभिक शोध मे महत्त्वपूर्ण "ए ब्रिफ स्केच आफ बेंगाली फोनेटिक्स (बुलेटिन आप दी स्कूल आफ ओरिएण्टल स्टडीज खंड 11 भाग 1, 1921) भारतीय भाषाशास्त्र कें हुनक अति विशिष्ट योगदान । बंगला भाषाक इतिहास पर हार्नले, बीम्स आ ग्रियर्सन लिखने छलाह, किन्तु यूरोपक विद्वान लोकनिक दृष्टि किछु महत्त्वपूर्ण विन्दु पर नहि पड़लनि । रवीन्द्रनाथ ठाकुर बीम्स सँ छूटल किछु वस्तु जोड़लनि, मुदा बंगला भाषाक श्रेष्ठ पंडित टैगोर कैं भाषाशास्त्रीय प्रशिक्षण नहि छलनि । पूर्ण तत्पर भेला सँ टैगोर जे कए सकैत छलाह सैह कएलनि चटर्जी । टैगोर कैं ई बुझल छलनि, ओ चटर्जी आ हुनक

Indian ... 117170

श्रेष्ठ पोर्थीक महा प्रशंसक छलाह । टैगोर अपन एक टा पोथी भाषाचार्यक रूप मे सम्बोधित करैत चटर्जी कैं समर्पित कएलनि ।

अपन अध्यापक जूल्स ब्लाक केर पोथी ला फार्मेश्यों दो लांग मराठे (1920) केर पद्धतिक अनुसरण करैत चटर्जी बंगलाभाषाक इतिहास कैं ठोस धरातल पर ठाढ केलनि । हुनका सोझा किछु नव सामग्री छलनि – नेपाल मे हरप्रसाद शास्त्री द्वारा ताकल प्राचीन बंगला मे 'चर्यापद', बाँकुड़ा जिलाक कोनो गाम मे वसन्त रंजन राय द्वारा ताकल चण्डीदासक एकटा हेराएल पाण्डुलिपि । एहि दूनू सँ हुनका जे भेटलनि से हुनक पूर्ववर्ती सभ कैं उपलब्ध नहि छलनि बंगलाभाषा केर विकास कैं नीक जकाँ बुझबा लेल चटजीर्क सुनिश्चित अवदान भेल ध्वन्यात्मक चरणक निर्धारण । एहि क्षेत्र मे पहिने जे काज कएलनि तनिका सभ कें ओ सुलभ नहि छलनि । इपेंथिसिस आ 'भावेल हार्मोनी' नामक ध्वन्यात्मक पद्धतिक सुनिश्चित क्रियाकलाप ओ स्पष्ट रूप सँ स्थापित कएलनि । बंगला ध्वनि विज्ञान मे ओ किछु एहेन बाधा हटौलनि जाहि सं बंगलाभाषाक विभिन्न बोली मे आपसी सम्बन्ध बुझल गेल । एहि लेल चटर्जी किछु बंगला शब्द गढलनि, जेना—अपश्रुति (एब्लाण्ट वा भावेल ग्रेडेशन), अपिनिहिति (इपेंथिसिस), स्वर-संगति (भावेल हार्मोनी) आदि । हुनक गढल ई शब्द सभ आन आन भाषा लेल भारत भरिक भाषाशास्त्री लोकनि स्वीकार कएलनि ।

बंगलाक बोली विविधता पर ओ बेसी चर्च नहि कएलनि । लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया मे ग्रियर्सन बंगला सहित सभ भारतीय भाषा लेल से कैने छलाह । भाषाक आधार पर भारतक सुनिश्चित मानचित्र आ ग्रियर्सन स आगूक काज लेल कम सँ कम दस पन्द्रह सालक अनुसंधानक प्रयोजन छल । ओ कए सकैत छलाह, किन्तु दुर्भाग्यवश नहि कएलनि । कदाचित विश्व विद्यालय मे अध्यापनक भारी बोझक कारण । जे अवसर चूकल से आब नहि आओत । पहिने भारत आ तखन फेर पाकिस्तानक विभाजनक बाद लोक सभ निरन्तर सीमा टपैत रहल अछि । ऐतिहासिक सन्दर्भ मे बोली सभक

क्षेत्रीयता ढनमनाइत रहल अछि, पश्चिम बंगाल मे तँ आर निराशाजनक रूप सँ ।

बंगला शब्दावली पर चटर्जी जे किछु लिखलनि से विशाद आ प्रायः निर्णायक (ओना किछु शब्द जकरा ओ देशज आ/वा आस्ट्रिक मूलक कहलनि से पछाति अनुसंधान भेला पर अन्यथा प्रमाणिक भे सकैछ, कारम ठाम ठाम ओ अनुमान कएने छथि)

किछु आन आन आर्य भारतीय भाषाक हमरा सभक बोध लेल चटर्जीक अवदान कोनो तरहेँ न्यून नहि । प्राचीन मैथिली पोथी वर्णरत्नाकर (1940) मे हुनक भाषाशास्त्रीय भूमिका वस्तुतः मैथिली भाषाक ऐतिहासिक व्याकरण थिक । एहि पोथी मे हुनक सह-सम्पादक छलाह पंडित बबुआ मिश्र । तहिना उक्तिव्यक्ति-प्रकरण (1953) मे हुनक भूमिका अवधी (वा कोसली, सम्पादक मुनि जिन विजयजी) भाषाक संक्षिप्त भाषाशास्त्रीय इतिहास थिक ।

हिन्दी आ उर्दू भाषा लेल चटर्जीक मुख्य अवदान अछि "इण्डो-आर्यन एण्ड हिन्दी (1942: दोसर शोधित आ परिवर्द्धित संस्करण 1960) मे । एहि पोथीक विषय-वस्तु गुजरात वर्नाकुलर सोसायटी (आब गुजरात विद्या सभा), अहमदाबादक शोध आ स्नातकोतर विभाग मे देल गेल व्याख्यान । एकर हिन्दी अनुवाद 1954 मे प्रकशित भेल ।

दोसर आर्य भारतीय भाषा जाहि पर चटर्जी नीक जकाँ ध्यान देलनि से भेल राजस्थानी । जनवरी 27, 28 आ 29, '47 कें राजस्थानी भाषाक इतिहास पर उदयपुर मे एकटा शिक्षण संस्था मे तीन व्याख्यान देलनि । व्याख्यान हिन्दी मे भेल छल जे पछाति उदयपुर सँ "राजस्थानी भाषा" ('49) नामेँ प्रकाशित भेल ।

आन आन भाषा जेना, द्रविड़, आस्ट्रिक आ आर्य-भारतीय, मे हुनक अनमोल आ मौलिक दृष्टि मुख्यतः अंग्रेजी आ बंगलाक संगहि किछु हिन्दी मे लिखल निबन्ध आ पम्फलेट सभ मे छिड़िओल अछि । अंग्रेजी मे किछु उदाहरणः रिकर्सिव्स इन न्यू इण्डो-आर्यन (1931); खारवेल (1933); दी प्रोनन्सिएशन आफ संस्कृत (1934; 60); दी औल्डेस्ट ग्रामर आफ हिन्दुस्तानी (1935); ए रोमन अल्फाबेट

फोर इण्डिया (1935; परिशोधित आ परिवर्द्धित 1972); नन-आर्यन एलिमेण्ट्स इन इण्डो-आर्यन (1936); इवोल्यूशन इन स्पीच साउण्ड्स (1938); सम इटिमोलोजिकल नोट्स (1939); सम इरानियन लोन-वर्ड्स इन इण्डो-आर्यन (1944); एन अर्ली अरेबिक वर्सन आफ दी महाभारत स्टोरी (1949-50); फोरनर्स एण्ड इण्डियन नेम्सः दी पंजाब स्पीच थ्रू दी एजेज (1950); ओल्ड तमिल, एनसिएंट तमिल एण्ड प्रिमिटिव द्रविड़ियन (1954); दी नेम असम-अहोम (1957); द्रविड़ियन फिलोलोजी (1957); म्युचुअल बोरोइंग्स इन इण्डो-आर्यन (1960); लेवेल्स आफ लिंग्विस्टिक एनेलसिस (1962); ग्लोटल स्पिरैण्ट्स एण्ड दी ग्लोट्ल सटॉप इन दी एस्पिरेट्स इन न्यू इण्डो-आर्यन (1964); दी कोरेस्पोंडेण्स बिटविन साउण्ड एंड फोनिम इन दी लाइट ऑफ मॉडन लिंग्विस्टिक थ्योरीज (1966); सम इरैनियन एण्ड टर्की लोन्स इन संस्कृत (1967); गंगारिदइ (1968); दी इलोक्वेन्ते ऑफ भेगनेस (लिंग्विस्टिक नोट्स 11, 1968); ओर्थोग्राफी एण्ड फोनेटिक्सः प्रोनन्सिएशन एण्ड ट्रेडिशनल स्पेलिंग इन लैंग्वेजेज, पार्टिकुलरली इन इण्डिया (1969); बैकग्राउण्ड आफ दी स्पोकेन वर्ड इन दी स्पीच-लोर आफ इण्डिया (1972) आदि ।

भारोपीय भाषाशास्त्र मे चटर्जी कें बड़ रूचि छलनि, किन्तु एहि पर ध्यान नहि देलनि । हुनका प्राचीन भारोपीय भाषा सँ ओकर बजनिहार मे बेसी रूचि छलनि । अपन कालेज जीवनक मादे "बाल्ट्स एण्ड आर्यन्स" (1968) केर भूमिका मे लिंखलनिः

भारोपीय लोक सभक दंतकथा आ किंवदन्ती आ शौर्य गाथा सभ लेल हमरा आसक्ति भेल..........होमर आ होमेरिका, हेसिोड, करुण रसक कविगण, यूनानक आन महान लेखक सभ मे यूनानी गाथा सबहिक मृत्युहीन रमणीयता ....सभटा उपलब्ध छल; मूल आ अनुवाद मे............बाल्ट्स केर आरंभिक साहित्य........प्रायः 50, साल पहिने 'लिथुएनियन डायनाज'सँ अवगत भेलहुँ, जकरा किछु पढलहुँ जर्मन आ अंग्रेजी अनुवाद मे ।

'बाल्ट्स एण्ड आर्यन्स' (इण्डियन इंस्टीच्यूट आफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला, 1968) भारोपीय भाषाशास्त्र लेल उल्लेखनीय अवदान ।

अक्तूबर 1966 मे चटर्जी इण्डियन इंस्टीच्यूट आफ एडवांस्ड स्टडीज, शिमला मे भारोपीय संस्कृति आ भाषाविज्ञानक किछु पक्ष पर छओ टा व्याख्यान देलनि । पोथी ओहि व्याख्यान सभ पर आधारित अछि । लेखकक शब्द मे 'बाल्ट्स एंड आर्यन्स" केर उद्देश्य वैज्ञानिक होएबाक संगहि लोकप्रिय, सामान्य रूपें अंग्रेजी पढनिहार सभ लेल बाल्टिक जगतक परिचय देब । आर्य-भारतीय आ भारोपीय भाषाविज्ञान आ संस्कृति सँ परिचित भारतीय कैँ सेहो जनतब होए । उद्देश्य इहो जे बाल्टिक जनगण कें भारत मे आर्य जगतक किछु पक्ष बुझल होए" ।

भारोपीय भाषाशास्त्र मे हुनक किछु महत्त्वपूर्ण शोध बेलः प्री-इण्डो-यूरोपियन (1942); रेस मूवमेण्ट एण्ड प्रीहिस्टोरिक कल्चर (1951); दी वर्ड एबाउट इगोर्स फॉक (1960); आर्मेनियन हीरो लिजेण्ड्स एण्ड दी इपिक आफ डेविड आफ सैसुन (1961): सम इंडो-यूरोपियन ट्राइबल नेम्सः लोन्स एण्ड इनहेरिटेंसेज (1967); वेद-संहिता बाल्टिका (1968); सम लिंग्विस्टिक नोट्स (1): इपर सी माउवे (1968); सम लिंग्विस्टिक नोट्स (111): लिगेसी आफ दी पास्ट एण्ड दी इम्पैक्ट आफ दी प्रजेण्ट (1968); संस्कृत 'गोविन्द': ओल्ड आयरिश 'बोएण्ड' (1970) ।

सुनीति कुमार चटर्जी प्रशिक्षण आ पेशा सँ भाषावैज्ञानिक मुदा हृदय सं कलाप्रेमी छलाह । कलाक सभ रूप — चित्रांकण, प्रतिदर्शन मूर्तिकला, भवन निर्माण कला, संगीत, नकल कला मानवक सुदीर्घ इतिहास मे जतेक जे किछु हो । ओ छलाह जन्मजात ऋषि, ठमकब हुनका लेल संभव नहि छल । कला आ संस्कृति ले तृष्णा हुनका कोनो ने कोनो लाथे कलकत्ता वा भारत सँ बाहर कतहु जेबा ले विवश करैत छल । कला आ संस्कृति पर सेहो चटर्जी ओतेक लिखलनि जतेक भाषा विज्ञान पर ।

हुनक आरंभिक रचना सभ, जे अंग्रेजी मे छल, बेंगाल एजुकेशन जर्नल मे आएल 1913 मे । तखन ओ विद्यार्थी छलाह । स्टूडेण्ट लाइफ इन कैलकटा 'आ' होस्टल लाइफ इन कैलकटा । दोसर रचनाक संग हुनक रेखाचित्र सभ सेहो छल (चित्रांकण मे सभ दिन

हुनक रुचि रहल)

हुनक पहिल बंगला रचना छपल 'साहित्य परिषद पत्रिका', 1916 मे ।

1976 मे ओ तीन टा कांज मे हाथ देलनिः (1) बंगला मे आत्मकथा (जीवनकथा) जकर लेखन जनवरी 1976 मे आरंभ भेल (2) अंग्रेजी मे एक पुस्तिका रामायण पर (3) रवीन्द्र जीवन देवता दिसम्बर 1976 क पहिल सप्ताह मे । ई तीनू काज बेसी नहि अगुआएल, कारण हुनक आँखि खराब होमए लगलनि ।

हुनक पोथी सभ मे निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण अछिः 'किरात जन कृति— दी इंडो-मंगोल्वायड्सः देयर कंट्रीब्यूशन टू दी हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ इंडिया (प्रतिभा देवी व्याख्यान, 1947 पर आधारित), एसिटिक सोसायटी, कलकत्ता 1951 द्वारा प्रकाशित (दोसर परिवर्द्धित संस्करण, 1974) ।

दी प्लेस आफ असम इन दी हिस्ट्री एंड सिविलिजेशन आफ इण्डिया (वाणीकान्त काकती स्मारक व्याख्यानमाला 1954) गौहाटी विश्वविद्यालय द्वारा 1955 मे प्रकाशित, पुनर्मुद्रण 1970) ।

अफ्रिकैनिज्मः दी अफ्रिकन पर्सनेल्टी (सर्वपल्ली राधाकृष्णनक प्राक्कथन) कलकत्ता 1960 ।

इण्डिएनिज्म एंड दी इण्डियन सिन्थेसिस, कमला व्याख्यानमाला, 1947; कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा 1962 मे प्रकाशित ।

द्रविड़ियनः अन्नामलै विश्वविद्यालय मे तीन टा व्याख्यान विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित, 1965 ।

दी पीपुल, लैंग्वेज एण्ड कल्चर आफ उड़ीसा (र्आतवल्लभ महन्ती स्मारक व्याख्यानमाला) उड़ीसा साहित्य अकादमी, भुवनेश्वर, 1966 द्वारा प्रकाशित ।

रिलीजियस एंड कल्चरल इंटेग्रेशन आफ इंडियाः आतमबापू शर्मा आफ मणिपुर स्मारक व्याख्यान-माला; इम्फाल, मणिपुर, 1967 सं प्रकाशित ।

इंडिया एंड इथोपियाः फ्राम दी 7 थ सेंचुरी बी. सी. एशिएटिक सोसायटी मोनोग्राफ सीरिजं नं. 15, 1968 (प्रसारित 1969) ।

वर्ल्ड लिटरेचर एण्ड टैगोर (विश्व भारती) शान्तिनिकेतन, 1971
सेलेक्ट पेपर्स (खंड 1) पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1972
जयदेव, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1973 ।
इंडियाः ए पोलिग्लाट नेशन एंड इट्स लिंग्विस्टिक प्रोब्लेम्स विस-ए-विस नेशनल इंटग्रेशन (महात्मा गाँधी स्मारक व्याख्यान-माला—3, 1973) महात्मा गाँधी स्मारक शोध केन्द्र, बम्बई, 1974 ।
दी रामायणः इट्स कैरेक्टर, जेनेसिस, हिस्ट्री, एक्सपैंशन एंड इक्सोडसः कलकत्ता, 1978 ।
सेलेक्ट राइटिंग्स (खंड 1), विकास, नई दिल्ली, 1978 ।
निम्नलिखित शोधपत्र महत्त्वपूर्ण अछिः
दी रिवाइवल आफ इण्डियन आर्ट एण्ड दी लखनउ स्कूल आफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, माडर्न रिव्यू, अप्रिल 1927 ।
दी पाल आर्ट आफ गौड़ एण्ड मगधः माडर्न रिव्यू, जनवरी 1930 ।
सम प्राब्लेम्स इन दी ओरिजिन आफ आर्ट एण्ड कल्चर इन इण्डिया (विश्व भारती क्वार्टर्ली, खंड 8, भाग 3, 1930-31) आर्ट इन क्वाइन्स, दी फोर आर्ट्स, एनुअल 1935 ।
रूपपतिः दी मास्टर आफ फॉर्म. माडर्न रिव्यू '36 वेस्ट अफ्रिकन नीग्रो आर्टः दी ब्रोंजेज आफ बेनिन (दी फोर आर्ट्स एनुअल, 1936-37) आंध्र आर्ट (रामलिंग रेड्डी षष्ठ्याब्दपूर्ति वाल्युम, खंड 2, वाल्टेयर, 1940) ।
बुद्धिस्ट सर्वाविल्स इन बेंगाल, बी. सी. लाववाल्युम भाग 1, कलकत्ता 1945 ।
सर विलियम जोन्सः 1746-94, एशिएटिक सोसायटी, कलकत्ता, 1946 ।
इस्लामिक मिस्टिस्यिन, इरान एंड इण्डिया (इण्डो-इरेनिका खंड 1, सं. 2, अक्तूबर 1946) ।
कृष्ण द्वैपायन व्यास एंड कृष्ण वासुदेव, एशिएटिक सोसायटी, कलकत्ता 1950 ।
अल-बेरुनी एंड संस्कृत, अल्बेरुनी कमेमोरेशन वाल्युम, इरान

सोसायटी, कलकत्ता, 1951।
रेस मूवमेण्ट्स एण्ड प्रीहिस्टोरिक़ कल्चर (दी हिस्ट्री एंड कल्चर आफ दी इंडियन पीपुल, खंड 1, 1951) ।
इण्डिया एड चाइनाः एंशिएण्ट कनटैक्ट्स, एशिएटिक सोसायटी, कलकत्ता 1960 ।
अवनीन्द्र नाथ टैगोरः मास्टर आर्टिस्ट एंड रिनोवेटर 'अवनीन्द्र नाथ टैगोर' गोल्डेन जुबिली नम्बर आफ दी जर्नल आफ इंडियन सोसायटी आफ ओरिएण्टल आर्ट, कलकत्ता, 1961 ।
हिन्दूज एंड टर्क्स फ्राम प्री-हिस्टोरिक टाइम्स — इण्डिया-सेण्ट्रल एशिया कनटैक्ट्स एंट लिंक्स
1. क्षेत्रचन्द चट्टोपाध्यय फेलिसिटेशन वाल्युम, जर्नल आफ दी गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, 1971 ।
2. एस. के. दे. मेमोरियल वाल्युम, कलकत्ता, 1972 ।
3. जर्नल आफ दी गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, 1973 ।

शिशिर भादुड़ीक संग

सुनीति कुमार चटर्जी कें नकल करबाक कला (मिमिक आर्ट) मे जखन ओ कालेज मे छलाह तखनहि रूचि भेलनि, विशेष कए शिशिर कुमार भादुड़ीक संसर्ग सँ । भादुड़ी हुनक मित्र । भादुड़ी पछाति रंगमंचक महान अभिनेता भेलाह । दूनूक मित्रता आजीवन रहलनि । आर मित्र सभ छलनि जनिका चटर्जी सप्रेम-साभार स्मरण कएने छथि । भादुड़ीक देहान्तक बाद एकटा विलक्षण बंगला निबन्ध मे चटर्जी हुनका सं अपन आरंभिक परिचय केर विवरण देलनि । एहि ठाम तकर एक अंशः

इण्टरमीडिएट कक्षा मे दू साल, दू साल स्नातक आ दू साल स्नातकोतर कक्षा' — हमर कालेज जीवनक ई छओ साल । विद्यार्थी जीवनक एहि छओ सालक उपयोग ओहि समयक सभ प्रकारक विद्यार्थी क्रिया कलाप में कैल । हमर परीक्षाफल सभ दिन नीक भेल । मुदा हम पोथी-कीट कहिओ नहि । आँखि आ कान फूजल रहैत छल । हमर संगी सभप्रकारक विद्यार्थी — नीक, अधलाह, उदासीन, सरल, धूर्त, टेढ, चालबाज, नैतिक, अनैतिक, काबिल बुड़िबक आदि । संगी सभ मे सुबुद्धि-सुदर्शन शिशिर कुमार भादुड़ी । परीक्षाफल तेहन नीक नहि आहार-व्यवहार आकर्षक, गपसप मे निपुण । छात्र समुदाय मे भादुड़ी "प्रायः एक दशक मे कलकत्ता विश्वविद्यालय मे सभ सं मेधावी आ लोकप्रिय छात्र" रूप मे सर्वमान्य । इमानदार आ सोझ लोक । आचरण मे सहज आ सत्य । ओकरा सँ किछु गाढ परिचय होइतहि अनेरे हम सभ झिकाइत गेलहुँ । हमरा सभक मित्रता केर कड़ी मे ओ छल ताग आ कसना जे अन्त धरि निमाहि देलक ।

पहिले पहिल शिशिर सँ कहिआ भैंट भेल से नीक जकां मन

नहि आछि । लगैत अछि जे फर्स्ट इयर क्लासक अन्त मे भेंट भेल— कलकत्ता युनिवर्सिटी इंस्टीच्यूट द्वारा आयोजित वार्षिक आवृत्ति प्रतियोगिता मे । पाँच भाषा मे आवृत्तिः अंग्रेजी, बंगला, संस्कृत, फारसी, अरबी । शिशिरक नाम अंग्रेजी आवृति में छलै । मन नहि अछि जे ओकरा पुरस्कार भेटलै वा नहि, हमरा नहि भेटल । युनिवर्सिटी इंस्टीच्यूट मे भेंट होएबा दिन सं हेम छेम बढैत गेल । ओही साल कालेजक विद्यार्थी सभ एकटा बंगला नाटक कएलक । फणीन्द्र नाथ मित्र बनल 'प्रतापादित्य' । शैलेन्द्र नाथ बसु 'नायिका' कल्याणी बनल । एकटा दृश्य विशेष रूप सँ स्मरण अछि । दू टा दुष्ट सँ अपन रक्षा लेल 'कल्याणी' तरूआरि भांजए लागल । तखनहि खेलौना बन्दूक लेने आबि गेल प्रतापादित्य आ सूर्यकान्त अचक्के आबि गेल । रंगमंच क पाछू पोटाश क्लोरेट बम फूटल । दूनू दुष्ट मुइल जका ओंघरा गेल । रंगमंच निर्देशन मे किछु गड़बड़ी भए गेल छलै । ताहि स बन्दूकक आवाज तीन चारि सेकेण्ड विलम्ब सं भेलै । एहि पर दर्शक समुदाय हँसए लागल । रंगमंच प्रबंधक बेस अप्रतिभ छलाह ।

दोसर साल हम सभ शेक्सपियरक 'जुलियस सीजर' केर मंचन कएलहुँ । हम पूर्ण सहयोग कएल, कोनो भूमिका नहि कएल, साज सज्जा आ मच निर्देश......शिशिर बनल ब्रूटस, हम ओकर परिधानक डिजाइन कैल जे ओकरा लेल बड़ उपयुक्त छलै । एकर बाद हम आ शिशिर आर निकट भेलहूँ............सेक्सपियरक नाटक सभक परिधान लेल हम सभ एकटा एंग्लो इण्डियन ओपेरा सँ सम्पर्क कैल । परिधान किराया पर देबा लेल एकर कार्यालिय ग्रैण्ड होटल केर आर्केड मे छलै । ओ सभ मात्र 150 टाका पेशगी पर गछि लेलक । टाका जमा करबाक जकरा भार देल गेलै औ निपत्ता भए गेल, से हम सभ बड़ देरी सँ बुझलहुँ, नाटक होएबा सँ दू वा तीन दिन पहिने..........

यूनान आ रोमक इतिहास केर छात्रक रूप मे हमरा ओकरा सभक कला आ गहना सभ चिन्हबाक अवगति छल । हमरा किछु मित्र कैँ ई बुझल छलै । ओ सभ हमर सहयोग लेल अनुरोध

कएलक । अपन दू टा सहपाठी, आनन्द कृष्ण सिंह (पछाति रीपन कालेज मे अंग्रेजीक व्याख्याता) आ निहार मित्र हमरा संग भेल । हम ओकरा सभ कें कहल, "कोनो भय नहि; रोमन परिधान बड़ साधारण, उज्जर रेशमी वस्त्र सँ एकटा रोमन टोगा आ पंजाब शैलीक कमीज ! एक जोड़ा चप्पल नीक जकाँ फबतै । एकटा रंगीन वस्त्र माथ मे बान्हि लेत । एहि रोमन परिधानक सभ प्रशंसा केलक । एकटा सोला टोप स बनल हेलमेट (जे तखन युरोपक लोक आ एग्लो-इण्डियन सभ पहिरैत छाल) एहि में सोना आ चानीक पत्ती लागल कार्डबोर्डक क्रेस्ट रहैत छल । एहने पत्तीसभ कनपट्टी पर सेहो लटकैत छलै । क्रेस्ट पर तूर साटल रहैत छलै जे असली शिरस्त्राण मे पाँखि वा घोड़ाक केश सन लगैत छल । 'ग्लेव' सेहो तहिना कार्डबोर्ड सँ बनल, ढाल सभ पर अकेरल गेल एस. पी. क्यू. आर. (सिनेटस पोपुलस क्यू रोमेनस) । चीताक स्तनपान करैत रोमुलस आ रेमस वला दृश्यक छवि । एके टा नारी पात्र पोर्शिया । ओकर परिधान आर सहजहि भेलै, एकटा नमहर शमीज मे ठाम ठाम किछु परिवर्तन ।

उज्जर रेशमी टोगा, कर्डिबोर्डक बनल उज्जर हेलमेट पहिरने, एस. पी. क्यू. आर. अंकित ढाल लेने आ लाला रोमन मार्शल लबादा मे अभिनेता सभ उतरल; हमरा सभ कैँ बड़ नीक लागल । दर्शक मे यूरोपक किछु नारी आ पुरुष । दर्शक समुदाय थपड़ी देलक । आब ओ सभ हमरा अदनार तरुणक लखेड़पनी सन लगैत अछि । 'जुलियस सीजर' क मचन साँचे सफल भेल । एकर मुख्य श्रेय शिशिर कैँ छलै जे ब्रूटस बनल । अभिनेता जे मार्क एण्टोनी आ प्रति-नायक बनल ओकर नाम स्मरण नहि अछि । चारिम वर्षक छात्र ओहो नीक अभिनय कैने छल । जेहन शिशिर कएलक तेहने । पोर्शियाक अभिनय सेहो नीोक भेलै । ई छल प्रथम वर्षक छात्र यतीन गांगुली । आनन्द सिंह, निहार मित्र आ हम तीनू गोटे रंगमंच लेल ऐतिहासिक परिधान बनेबा मे ख्याति पाबि गेलहुँ । पछाति युनिवर्सिटी इंस्टीच्यूट मे चन्द्रगुप्त, अशोक, जना एवं आन नाटक हमरा सभक ख्याति आर स्थापित कए देलक । जखन शिशिर कालेज

छोड़ि रंगमंच कैँ पेशा बना लेलक तखन हमरा सभक अग्रजवत विश्वविदित इतिहास पण्डित राखालदास बनर्जी हमरा सभक नेता बनलाह । बनर्जीक मदति सँ शिशिर आलमगीर, सीता, दिग्विजय आदि प्रदर्शन कएलक । गिरीन सेन सँ सेहो बड़ मदति भेटलै ।

शिशिरक प्रयास सं भारतीय रंगमंचक साज सज्जा मे क्रान्ति आबि गेल । रंगमंच सम्बन्धी शिशिरक क्रिया कलाप, बंगला, अंग्रेजी आ संस्कृत साहित्य पर ओकरा सं चर्चा हमरा दृढता देलक जकरा हम अपन जीवन मे पैघ लाभ बुझैत छी ।

बंगला लेखक

शिशिर कुमार भादुड़ीक बाद रवीन्द्र नाथ टैगोर आ हुनक लेखन चटर्जी कैँ सभ सँ बेसी प्रभावित कएलक । भादुड़ीक प्रभाव तरुण वयस मे, टैगोरक प्रभाव सभ दिन, विशेष कए जीवनक सांध्य बेला मे । विश्वक एक टा अति महान कवि आ चिन्तकेक रूप मे नहि, टैगोर लेल हुनका मन मे एक अद्भुत भावना छलनि । टैगोर कें चटर्जी अपन भाषाशास्त्री बन्धु बुझैत छलाह । महाकवि सं हुनक जे आपकता छलनि से "वर्ल्ड लिटरेचर एण्ड टैगोर (1971) केर प्राक्कथन मे एना राखि देने छथिः

> रवीन्द्र नाथ टैगोर बंगला भाषा पर अपन (बंगला) पोथी मे अपना मादे जे कहने छथि जे आर बेसी सत्यता सं हमरा अपनहु लेल उचित बुझि पड़ैत अछि । हुनक "बंगला भाषा परिचय" मे विलक्षण वैज्ञानिक तर्क आ निष्कर्ष अछि; भाषाशास्त्रीय विषय मे हुनक वैज्ञानिक ज्ञान वा यथार्थता मे हुनक दाबी यथार्थ अछि जे ज्ञानक क्षेत्र मे गम्भीर अन्वेषण लेल प्रगाढ रूचि छनि । यैह हुनक धारणा कें प्राचीनता सँ मुक्त के सकैछ । यैह हुनक पाठक कैँ गंभीर आ वैज्ञानिक रूचि दए सकैछ । एहि मे बरु एहेन दोष सभ रहओ जाहि पर वैज्ञानिक विशेषज्ञ लोकनिक भौंह टेढ होनि । भाषाषास्त्रक प्रोफेसरक रूप मे हमरा अपनहु लेल..............साहित्य पर अपन धारणा स्थापित करबाक जुम्मुस देलक । ओना भाषा शास्त्र कें नीरस विषय बुझल जाइत छै ।

चटर्जी कला आ साहित्यक महान् प्रेमी छलाह । दृश्य कला मे ओ 'क्लासिकल' केर निःसंदेह पक्षपाती छलाह, किन्तु आधुनिक सँ परहेज नहि छलनि । उदाहरणार्थ, अजन्ता चित्र कला केर ओ

प्रशंसक छलाह, संगहि अपन भूमि केर तथाकथित कालीघाट 'स्कूल' क चित्रकलाक सेहो हृदय सं गुणगान कएलनि । नकल करबाक कला आ संगीत मे ओ 'क्लासिकल' पद्धतिक पूर्ण पक्षपाती छलाह, समकालीन संगीत मे हुनक रूचि नहि छलनि । तानसेनक 'ध्रुपद' सम्मोहित करैत छलनि आ कीर्तनक उच्च कोटिक गायन लेल धनि सन । सैह हाल साहित्य मे । 'क्लासिकल आ स्वीकृत लेखक सभ स्वीकार छलनि । निःसन्देह ओ टैगोर काव्यक प्रशंसक छलाह, किन्तु हार्दिक रूचि क्लासिकल काव्य लेल । टैगोरक गीत सभक ओ सभ दिन प्रशंसक, किन्तु जीवनक सांध्य बेला मे हल्लुक आ आनन्द भाव सँ लिखल टैगोर गीत सभ पर विशेष ध्यान देमए लागल छलाह ।

जीवन-देवता विषयक कविता आ गीत सभ लेल विशेष आकर्षण छलनि । चटर्जीक अनुसार जीवन-देवताक टैगोरक धारणा विश्वक रहस्यवादी काव्य कैं विशिष्टतापूर्ण अवदान— सौन्दर्य आ प्रेमक माध्यम सं 'सर्वोच्च' केर हुनक अनुभूतिक सोपान.....................।

चटर्जी सूफीवादक अध्ययन कैने छलाह । एहि सं हुनका टैगोरक जीवन देवताकक धारणा बुझबा मे मदति भेलनि । ओ लिखने छथिः

रवीन्द्र नाथक काव्य मे बेर बेर नाना रूप आ वातावरण मे प्रगट होइछ जीवनदेवताक छवि । रवीन्द्रनाथक रहस्यवादी रोमाण्टिक काव्य लेल केन्द्रीय अवधारणा एकरे कहल जा सकैछ । रवीन्द्रनाथक जीवन-देवता सं तुलना करबा ले छवि सूफी साहित्य टा मे देखल जा सकैछ । ओतए 'सर्वोच्च' केर अवधारणा ब्रह्माण्डक प्रेयसी 'माशूका' रूप मे अछि । मुदा सूफी अवधारणाक तेना वैयक्तिकीकरण वा मानवीकरण नहि भेल । यूरोपक मध्यकालीन 'रोमांस' मे शौर्यमय क्रिया कलाप — प्रेम, सेवा, युद्ध आदि लेल श्रीमन्त (नाइट) कैं प्रेरित केनिहारि नारी मे सूफी 'माशूका' आ आ रवीन्द्र नाथक 'जीवन देवता' सँ किंचित साम्य आछि । यरिपाइडिजक नाटक 'हिप्पोलाइटस मे देवी आर्टेमिसक अशरीरी उपास्थिति बेर बेर मन पड़ैछ । महाकाव्य-नाटक केर दोसर भाग मे फाउस्ट कैं प्रेरणा देनिहारि गोथेक हेलेन कैं सेहो स्मरण कैल जा सकैछ । रोमन-कैथोलिक गाथा

आ रहस्यवादक मध्य कालीन कवि दान्तेक 'डिवाइन कामेडी' क 'विसिया नुओवा' आ 'पैरेडिसो' दूनू मे अछि बिएट्रिस । किन्तु बिएट्रिस सांसारिक व्यक्तिक अध्यात्मिक प्रेरक वा 'गाइड' मे परिणत रूप भेल । रवीन्द्र नाथक 'जीवन देवता' एके संग ब्रह्माण्डीय आ सांसारिक शक्ति भेल जाहि मे कविक जीवन-अस्तित्व समाविष्ट होइत रहल अछि ।

जीवन देवताक टैगोरक विषय-वस्तु पर चटर्जी जे लिखलनि ताहि सँ पाठक कैँ हुनक अपन साहित्यिक आ कलात्मक अवधारणा आ हुनक पाण्डित्य क स्पष्ट परिचय भेटैत छै ।

विद्वान आ शिक्षाविद

विद्वान आ शिक्षाविद भरिसक्के गपसप मे पटु होइछ । सुनीति कुमार चटर्जी विरल अपवाद छलाह, गपसप मे परम पटु । विज्ञान आ दर्शनशास्त्र छोड़ि प्रायः कोनो विषय पर सहज भाव सँ धारा प्रवाह गप कै सकैत छलाह । विद्वन्मण्डली, मित्रमंडली आत्मीय सभ कैँ ओ प्रिय छलाह । कहिओ हुनक एक मित्र कहने छल जे राष्ट्रीय प्राध्यापक चटर्जी भारत भ्रमण लेल अबैत पैघ लोक सभक प्रधान सरकारी 'गाइड' बड़ नीक होइतथि ।

चटर्जी छलाह । मुदा संसारक कोनो भाग मे लोक जे किछु भोजन करैत अछि तकर ओ विरोधी नहि छलाह । बेसीकाल देखल जाइत छल जे कोनो गामक गरीबक घर मे अप्रत्याशित पाहुन जकाँ जतबे स्वाद सँ चूड़ा खाथि ततबे स्वाद सं कोनो विख्यात चीनी रेस्तराँ मे 'फ्रायड राइस' ।

आरंभ कालक अपन एक महत्त्वपूर्ण कविता मे रवीन्द्र नाथ लिखने छथि, "वैराग्य साधने मुक्ति से आमार नय" । चटर्जीक जीवनक यैह उद्देश्य छलनि । ओ जीवनक बेसी सँ बेसी आनन्द लैत छलाह, किन्तु ताहि लेल अपन सिद्धान्त कें ताख पर नहि राखथि, आनक कोनो क्षति नहि करथि । निःसन्देह हुनका जीवन मे नीक वस्तु सभक सेहन्ता छलनि, किन्तु ताहि लेल ओ झगड़ा नहि करैत छलाह । ओ कखनहु नहि बिसरैत छलाह जे ओ ब्राह्मण छथि, ब्राह्मणक रूप मे अपन सामाजिक कर्त्तव्य आ उत्तरदायित्व सभ लेल ओ पूर्ण सचेष्ट रहैत छलाह ।

ब्राह्मण लेल शास्त्रादि मे निर्धारित आवश्यक कर्मकाण्ड मे सं अधिकांश चटर्जी निमाहैत छलाह । वार्द्दक्य मे ओ जेना रीति रेवाजक प्रति अविश्वासी भेल जा रहल छलाह । निकट सम्बन्धी आ मित्र

मण्डली सभ मे ओ अन्तर्जातीय विवाहक अनुमोदन करै लगलाह, एहेन विवाह सभ मे हकार सेहो पूरए लगलाह । देहावसान सं किछु साल पहिने हुनक आध्यात्मिक धारणा पर उद्धरणः

> प्रोफेसर स्वंय कैँ भावना सं रहस्यवादी आ बुद्धि सं प्रत्यक्षवादी मानैत प्रकाशक प्रवेश लेल आत्मा आ बुद्धिक द्वार आ खिड़की सभ फूजल रखैत छथि — से ओ ज्योति स्वर्ग सं आवओ तैयो । अन्तरतम सं ओ गछने छथि अपन आकर्षण आ अनिश्चित आस्था एक चरम यथार्थ मे जे जीवन आ आस्तिव मे अज्ञेय आ परिव्याप्त अछि; यथार्थ जे (वेदान्त आ आधुनिक विज्ञान दूनू कहैत अछि) बुद्धि वा ज्ञान सेहो थिक; ओ यथार्थ, प्रकृति आ मानव दूनू मे जकर चिन्त्य आ प्रकट रूप छै; अल्बर्ट आइंस्टीनक शब्द मे "भावाविष्ट आश्चर्य"; यथार्थ, जकरा चिन्तनशील व्यक्ति 'रस' वा 'रसानुभूति' रूप मे 'आनन्द' बुझैछ — ओहि परम सत्य मे ।

यूरोपीय तत्त्व लेल प्रेम आ रूचि हुनका भारतीय परम्परा मे नीक जकाँ स्थापित होएबा मे मदति कएलक — भारतीय धर्म मे । यैह हुनक अपनो विश्वास छलनि । भारत — धर्मक सूत्रीकरण अपन ढंग सँ करए चाहैत छलाह ओ । रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर आ सर्वपल्ली राधा-कृष्णन सेह सैहो कएने छलाह । वेदान्त दर्शन लेल हुनका गम्भीर निष्ठा छलनि, किन्तु प्राचीन यूनानी चिन्तन केर ओ परम प्रशंसक छलाह । आरंभिक ताओवाद, मुस्लिम सूफीवाद, अरब, इरान आ इसाई रहस्यवाद सभ लेल हुनका निष्ठा छलनि ।[1]

---

1. सुनीति कुमार चटर्जी : दी स्कॉलर एण्ड दी मैन, जिज्ञासा कलकत्ता, 1970, पृष्ठ ७

किं बहुना

कोनो भाषाक वैयाकरण प्रायः ओहि भाषाक नीक लेखक नहि होइछ । सुनीति कुमार चटर्जी बंगला भाषाक महापण्डित छलाह । रवीन्द्रनाथ ठाकुर बंगला भाषा पर हुनका अपन एकटा पोथी समर्पित करैत "भाषाचार्य कहलनि । नियमक ओ विरल अपवाद छलाह । चटर्जी बंगला बहुत नीक लिखैत छलाह, आ से दूनू शैली मेः साधु भाषा आ मानक चलती भाषा ओना ओ चलती भाषाक पक्ष मे छलाह । एहि दृष्टि सं ओ चलती भाषाक महा पक्ष धर प्रमथ चौधरीक दल मे छलाह । चौधरीक प्रशंसक छलाह चटर्जी । चौधरी आ हुनक पत्नी इन्दिरा देवी (रवीनद्रनाथक भतीजी) केर ओतए ओ सदिखन प्रिय अतिथि होथि । चौधरीक साहित्यिक पत्रिका 'सबुज पत्र' मे लिखैत छलंाह चटर्जी । चलती भाषा मे लिखल हुनक निबंध सभ बंगला साल 1325 (1918) सँ 1333 (1926) मे पत्रिकाक विसर्जन धरि प्रकाशित होइत रहल । आत्मकथात्मक आ संस्मरणात्मक निबंध संग्रह "पथ-चलती" (1962) प्रथम खंड श्री आ श्रीमती चौधरी कैं समर्पित कएलनि जे हुनक श्रद्धाक प्रमाण भेल ।"

बंगला साहित्य कैं चटर्जीक अवदान संख्या वा गुणवत्ताक दृष्टि सँ थोड़ नहि अछि । चटर्जी काव्य रचना नहि कएलनिः एकर अवगति नहि छलनि । ओ उपन्यास नहि लिखलनिः एहि मे विशेष रूचि नहि छलनि । ओना अपन चारू कात जे देखलनि तकरा सभक मादे लिखलनि । हुनक दृष्टि आ भावना ओहने छनि जेहन कलाकार वा उपन्यासकारक रहैत छै । पत्र, डायरी वा यात्रा विवरण आदि लेखन लेल हुनक प्रतिभा उपयुक्त छल । चटर्जी डायरी नहि लिखने छथि । हुनक उच्च कोटिक किछु लेखन एहेन छनि जकरा डायरी आ यात्रा विवरण दूनू श्रेणी मे राखल जा सकैछ । हुनक उत्कृष्ट

रचना सभ विद्वान पाठक, ओ पाठक जकरा समाज शास्त्र आ संस्कृति मे प्रगाढ रुचि छै तकरा नीक लगतै । यात्रा सभ पर लिखल चारि टा खंड चटर्जीक अनमोल अवदान भेल बंगला साहित्य कें ।

भाषाशास्त्र आ सांस्कृतिक विषय सभ पर ओ बहुत किछु लिखलनि । ओहि सभ मे अपन शैलीक कौशल देखौलनि । भाषाशास्त्रीय पाण्डित्यक खपलोइ मे झाँपल छल एकटा साहित्यिक पुरुष आ विलक्षण द्रष्टा । ओ बहराएल जखन रवीन्द्रनाथ टैगोरक संग चटर्जी इंडोनेशिया भ्रमण मे छलाह । टैगोरक निकट सम्पर्क सँ हुनक विश्वास जागल । ओ जे देखलनि, अनुभव केलनि तकरा आत्मीयता, निष्ठा आ उछाह सं लिखलनि ।

मासिक 'प्रवासी' मे धारावाही रूपैं 1927 मे भ्रमणक लगले बाद चटर्जीक भ्रमण डायरी सितम्बर 1927 सँ अप्रिल 1929 धरि 'द्वीपमय भारत' शीर्षक सँ (प्रवासी मे इंडोनेशिया पर लिखल टैगोरकटटके रचल कविता सभ छपैत रहल । ओही शीर्षक सँ बहुत रास चित्रक संग ई प्रकाशित भेल 1940 मे । 'रवीन्द्र संगमे द्वीपमय भारत ओ स्यामदेश' शीर्षक सं 1964 मे एकर पुनर्मुद्रण भेल किछु नव वस्तुक संग । ई यात्रा विवरण, चिट्ठी पत्री आ डायरी लिखल आ सुनाओल जाइत छल रवीन्द्र नाथ कैँ । हुनका नीक लगलनि । ओ लिखलनि पी. सी. महलानबीस कैँ; जे "जाबा यात्रीर पत्र मे छपल । (लेटर्स फ्राम ए ट्रेवलर इन जावा)[1]

हमरा सभक दल मे सुनीति अछि । ओकरा विद्वान बुझैत रही । से ओ अछि । आब बुझलौं जे सम्पूर्ण कें टुकड़ी टुकड़ी कए देब फेर टुकड़ी सभ कें जोड़ि कए सम्पूर्ण बनेबा मे ओ निपुण अछि । हम इहो बुझलौं जे भीड़ मे दौड़ैत ई संसार दृश्य आ दृष्टिक निरन्तर प्रवाह उपस्थित करैत क्षणभरि बिलमैत नहि अछि । सुनीति एकरा छानि सकैछ, से ओतबे गति मे, गतिक सम्पूर्ण स्पन्दनक संग । तकरा फुर्ती सँ, निष्ठापूर्वक लेखन मे राखि सकैछ । एहिक्षमताक मूल मे अछि हमरा सभक चारु संसारक विभिन्न व्यापार मे ओकर रुचि । ओकरा लेल महत्त्वहीन वा तुच्छा किछु नहि, ओकर कलम महत्त्वहीन कैँ महत्त्वपूर्ण दैत छै । सामान्य रूप सं ई कहल

जा सकैछ जे भाषा विज्ञानक अतल मे गेल अछि वाक कलाक गैलरी धरि ओ नहि जा सकैछ । वाक कला त सतह पर रहैत अछि । सुनीतिक दृष्टि भाषाक प्रवहमान छविक कण्ठ नहि मोकैत छै । अद्भुत छै ओकर भाषा । सुनीतिक लादल पत्र सभ अहाँ कैं समय पर भेटत । तरवन अहाँ ओकर गरिमा देखब । पत्र लेखन मे साम्राज्यवाद, जे घेरैत अछि वर्णन राज्य कैं । कतहु किछु छूटल नहि छै, छोट-पैघ किछु नहि । सुनीति लेल "पत्र लेखन विशारद" वा "पत्र लेखन सम्राट" वा "श्रेष्ठ पत्र लेखक" उपाधि उचित । दोसर पत्र मे ओ लिखलनिः

सम्भव जे सुनीति एहि भ्रमणक सम्पूर्ण विवरण देत । ओकर दृष्टि आ स्मृति दूनू शक्तिशाली । ओ जतेक उताहुल अछितेहने ओकर दृष्टि छै । जे किछु देखैत अछि से सभ नीक जकाँ मन रहैत छै । किछु नहि छूटैत छै, ने रखबा मे, ने परसैत काल । जे नहि भेटल से हेराएल । हमरा होइत अछि जे हमरा सभक भ्रमणक विवरण कैं सुनीतिक कलम सँ कोनो क्षति नहि हेतै, ई हेराएत नहि ।

चटर्जीक दोसर भ्रमण-डायरी 1935 मे यूरोप भ्रमणक अवसर पर आएल । ई पहिने 'प्रवासी' (1935-36) आ 'भारतवर्ष' (1937-38) मे धारावाही; 'पश्चिमेर यात्री' नामे पुस्तकार 1939 मे[2] (चारिम संस्करण 1965) ।

तेसर आ अन्तिम पोथी कोनो पत्रिका मे नहि आंएल । 'यूरोप' (1938) नामे एहि पोथीक दू टा खंड (खंड 1 1944 मे, खंड 2 1945) । एकर विषयवस्तु अगिला खेपक यूरोप भ्रमण ।

उपर्युक्त यात्रा-पत्र-डायरीक अतिरिक्त एकटा साधारण बटोहीक रेखा चित्र (शब्द चित्र) दू खड मे उच्च स्तरीय साहित्यिक रचना– 'पथ-चलती', 1962 आ 1964 मे प्रकाशित । किछु शब्द चित्र मे चटर्जी अपन नेनपन आ उठानी वयस रखने छथि, ओहो सभ प्राणवन्त आ उष्ण । भिक्षुक 'गाड़ीवान' आ 'काबुलीवाला सहयात्री' आदि मे संक्षिप्त आ विलक्षण चरित्र-चित्रण । हुनक स्कूलक अध्यापक प्रधान पण्डित[3] केर व्यक्तित्व वर्णन बेस रुचिगर । मातृकक एकटा वयसाहु सरोकारी पर जे लिखलनि से विभूति भूषण बनर्जी लिखित कथा भए सकैत छल[4] ।

'पथ-चलती' केर किछु शब्द चित्र सँ चटर्जी महान उपन्यासकार सभक दीर्घा लग आबि गेल छथि । साहित्यिक यान चटर्जी कैँ छुटलनि से अक्षमता सँ नहि, मौलिक रुचिक अभाव मे । हुनक अवलोकन अति सुक्ष्म आ हुनक स्मृति जेना फोटोग्राफी । ओ जे देखलनि आ बुझलनि से निष्ठा सँ लिखलनि । मुदा ओ जे अनुभव कएलनि से नहि लिखल भेलनि । कथा वा उपन्यास लेखन लेल स्मृति कैँ पचा कए ओकरा गूनय-धूनय पड़ैत छै । अपन अनुभवक रंग लेपए पड़ैत छै । चटर्जीक चिन्तन मे भावना नहि छलनि । हुनका मानस सरंचना मे विश्लेषण छल सर्जनात्मक, संश्लेषण नहि । अपन कोटि मे सुनीति कुमार चटर्जी अद्‌भुत विद्वान छथि ।

असाधारण लोकक व्यक्तित्व साधारणतः जटिल होइत छै । सुनीति कुमार चटर्जी असाधारण लोक छलाह, तैं एकर अपवाद नहि । हुनक मानसिकता आ चरित्रक बनोतरीक दूनू पक्ष छल— एकटा सहज लोक, दोसर जटिल विद्वान । एहि दूनू पक्ष मे कोनो विरोध नहि, जौं सदिखन सामंजस्य नहि तँ अनवरत युगपत छल । नैष्ठिक ब्राह्मण परिवार मे जन्म ग्रहण कए ओ नागरिक जीवन अङेजलनि आ ब्राह्मणक अधिकांश कर्मकाण्डक त्याग कए देलनि । जनउ पहिरब आ भोर कैँ गायत्री जप छोड़ि आर सभ कर्मकाण्ड सँ मुक्त भए गेल छलाह । भारत मे आ ब्राह्मण कुल मे जन्म लेल ओ नियतिक आभारी छलाह, पुरखा सभक आध्यात्मिक आदर्श कैँ नहि छोड़ि देने छलाह ।

बंगाली युवक जे इंगलैण्ड आ यूरोप जाइछ ओ परिस्थिति सँ विवश भए गोमांस खाइछ (ओतए जे अपन निष्ठा बचएबाक प्रयास कएलक तकरा स्वास्थ्य आ जीवन पर सेहो संकट । मेधावी गणितज्ञ रामानुजमक उदाहरण लिअ ।) स्वदेश आपस भएं ओ सभ गोमांस भक्षण नहि गछलक । बहुत गोटे प्रायश्चित कएलनि, जकर सभ सँ उत्कट चरण भेल गायक गोबर गीरब । जी सँ मलाशय धरिक प्रतीकात्मक शुद्धीकरण । पश्चिमक पहिल यात्रा सँ आपस भेला पर चटर्जी कैँ पिता जे कहलथिन से सभ कएलनि, प्रायश्चितधरि । किन्तु विदेश मे गो मांस भक्षण ओ अस्वीकार नहि कएलनि । प्रायश्चित हुनक मनोभावक विपरीत — तैं एकर प्रतिक्रिया भेल । विश्वविद्यालय मे सहकर्मी लग ओ बजलाह जे गोमांस आ अति स्वादिष्ट होइत

छै । हुनक एहेन बात सभ किछु सहकर्मी कैँ बड़ कठाइन लगलै जे हुनका बूझि नहि सकल । किछु सहकर्मी मे किछु दिन लेल अप्रिय भए गेलाह ।

जनउ ओ जीवन भरि पहिरने छलाह, हुनका एकर गौरव छलनि । सामाजिक धरातल पर ओ बड़ नरम भए गेल छलाह । पश्चिम सँ आपस भेला पर युवा प्रोफेसर चटर्जी हिन्दू महासभा दिस आकर्षित भेल छलाह । महासभा तखन आँखि मूनि कए अहिन्दू कैँ हिन्दू बना रहल छल, विधवा विवाहक ओरिआओन कए रहल छल । ध्यान देबाक अछि जे तत्कालीन राजनीति सँ नहि, सामाजिक सुधार सँ ओ प्रभावित भेलाह ।

पछाति ओ ब्राह्मक अब्राह्मण सँ विवाह स्वीकार कएलनि । समयानुसार विवाहादि संस्कारक जटिल पद्धति कैँ सहज आ सुगम बनएबाक सेहो ओ प्रयास कएलनि ।

छूआछूति कैँ प्रश्रय नहि देलनि चटर्जी । पछाति अन्तर्जातीय विवाहक अनुमोदन कएलनि । कहल जा सकैछ जे जनउ हटा कए ओ जातिहीन छलाह ।

सुनीति कुमार चटर्जीक मानसिकता मे किछु विरोधाभास छलनि जे हुनका आकर्षक व्यक्ति बना देने छल । स्वभाव आ अभ्यास मे सोझ आ निरभिमान । किन्तु अपन परिसर कैँ सजल धजल राखब नीक लगैत छलनि । एकर दू तीन टा भिन्न भिन्न कारण बुझि पड़ैत अछि । जीवन पद्धतिक सहजता हुनका वशानुगत भेटलनि । कलानुराग सं सजल धजल रहबाक सेहन्ता । अन्तरतम सँ विद्वान चटर्जी एहेन लोक छलाह जे़ सामाजिक महत्त्वकांक्षा नहि घोंटलनि । एहि महत्त्वाकांक्षा सँ विवश भेल ओ युनिवर्सिटी चेयरक त्याग कए एकटा राजनीतिक नियुक्ति स्वीकार कएलनि । एहि सं हुनक मनीषा धरि अक्षत रहल । गंभीर विषय सभ पर व्याख्यान दैत आ कक्षा सभक संक्षिप्त सत्र लैत रहलाह । अन्त मे अक्षर जगत मे आपस भेलाह, ओ ह्यूमेनिटिज मे भारतक राष्ट्रीय अध्यापक भेलाह । ई काज आ पद दूनू हुनका लेल सर्वथा उपयुक्त ।

भारतीय संस्कृति सँ चटर्जी कैँ अशेष प्रेम । छात्र जीवन मे ओ यूनान प्रेमी छलाह, यूरोपक संस्कृति प्रेमी छलाह । ई प्रेम कहिओ छूटल नहि, हेराएल नहि । किन्तु एहि सँ आगू आबि गेल अपन

संस्कृतिक प्रेम । एहि मे पहिल उत्प्रेरक भेल स्वदेशी आन्दोलन जकर धाह हुनका छात्र जीवन मे लागल छलनि । मातृभूमि प्रेम सँ युवा विद्वान शिक्षोन्मुख भए गेलाह । रवीन्द्रनाथ टैगोरक संसर्ग मे हुनक दृष्टि उन्मीलन भेल आ भारतीय संस्कृति सूझल । चटर्जीक विश्व भ्रमण, अगुआएल सभ्यताक प्रेम, मानवक कलात्मक सर्जना मे आस्था, संस्कृत गाथा सभ मे रूचि आ रवीन्द्र नाथ टैगोरक बोध – ई सभ मिऽझर भए हुनका भारतीय संस्कृतिक पक्षपाती बना देलक । भारतीय सस्कृतिक प्रेम बहुत लोक लेल फैशन भए गेल ! चटर्जी लेल ई भेल आस्था ।

इंगलैण्ड, यूरोप, एशियाक किछु देशक अनेक विश्वविद्यालय आ सांस्कृतिक संस्था सभ मे जा कए चटर्जी व्याख्यान देलनि । सभ ठाम भारतक सांस्कृतिक राजदूतक रूप मे हुनक स्वागत भेल । वस्तुतः जौं एहन कोनो पदक सृजन करैत भारत सरकार तँ चटर्जी एकमात्र नहि तँ सभ सँ उत्तम व्यक्ति भए सकैत छलाह ओहि पद लेल । हम दोष नहि देबै सरकार कैँ । ह्यूमेनिटिज मे राष्ट्रीय प्रोफेसर नियुक्त कए सरकार ओहने काज कैलक ।

बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध मे भारत मे ओ सभ सँ विख्यात भाषाशास्त्री, ध्वनि वैज्ञानिक छलाह । हुनक श्रेष्ठ पोथीक यूरोपक एक प्रशंसक हुनका पाणिनि आ पतंजलि केर वास्तविक उत्तराधिकारी घोषित कैलनि । बहुत लोक कैँ उत्कंठा छै जे भाषाशास्त्र मे चटर्जीक कोन सुनिश्चित अवदान छनि । ई विषयवस्तु तकनीकी भेल जे सामान्य पाठक नीक जकाँ बुझि सकत । मुदा एकर संक्षिप्त विवरण देल जा सकैछ ।

मध्य आर्य भारतीय स्थिति सँ आधुनिक बंगला धरि एकर विकास मे प्राचीन आर्य-भारतीय भाषाक इतिहासक धारा चटर्जी निर्धारित कैलनि । हुनक पूर्ववर्ती सभक अवदान महत्त्वपूर्ण छल । चटर्जी हुनका सभक त्रुटि-विच्युति, भूल-भ्रान्ति देखौलनि । पूर्ववर्ती सभ कैँ बहुत किछु जे उपलब्ध नहि छलनि चटर्जी तकर उपयोग केलनि ।

चटर्जी ध्वनि विज्ञान विशेज्ञ, प्रोफेसर डैनिएल जोन्स केर एकटा उत्तम छात्र छलाह । चटर्जीक 'ब्रिफ स्केच आफ बेंगाली फोनेटिक्स', भाषाशास्त्र मे हुनक पहिल प्रकाशन, अति श्रेष्ठ अवदान भेल ।

आर्य-भारतीय भाषा सभ मे बहुत समस्याक ओ समाधान कएलनि । एहि सँ किछु आधुनिक आर्य भारतीय भाषा सभक इतिहासक पुनर्रचना मे मदति भेल । ओ सभटा विवरण देब एहि पोथी मे संभव नहि ।

सोलहम शताब्दीक अन्त सं बंगाल मे वैष्णव मतक प्रचार भेल । कलकत्ता आ एकर उपनगर सभ मे बसल अधिकांश ब्राह्मण परिवार वैष्णव नहि । कलकत्ताक ब्राह्मण सभ स्मृति, न्याय आ ज्योतिष पढौनिहार विद्वान अथवा सम्पन्न परिवार सभ मे महादेवक पूजा करौनिहार । (बंगाल मे सम्पन्न लोक सभ मे महादेवक पूजा बड़ प्रचलित) कलकत्ताक देवी मानल गेलीह् काली । किछु ब्राह्मण कालीक भक्त । यैह् शिव आ काली पूजक ब्राह्मण कलकत्ता मे बहु संख्यक । मातृकुल आ पितृकुल दूनू दिस सँ चटर्जीक परिवार शिव आ काली पूजक । चटर्जी कैँ कोनो मत लेल विशेष आग्रह नहि, तथापि शिव लेल स्वाभाविक भक्ति । नेनपन मे हुनका भगवान मे विश्वास छलनि, शिव लेल भक्ति । कृष्ण लेल हुनक आग्रह नहि, चैतन्य आ हुनक आन्दोलन मे रूचि नहि । ई एक प्रकारे दुर्भाग्यपूर्ण । वैष्णव काव्य सँ ओ पूर्ण परिचित, किन्तु कीर्तन मे रूचि नहि । पछाति ओ कहिओ काल वैष्णव काव्य पढथि आ रसास्वादन करथि । अन्तिमे वर्ष सभ मे टैगोरक सुकोमल आ व्यक्तिगत गीत सभ लेल हुनक रुचि खूब गाढ भेल ।

पछाति चटर्जी कैँ प्रत्यक्षवादी कहल जाएब नीक लागए लगलनि । संभवतः ई धारणा ठीक छल । चटर्जी मे भावनात्मक गाम्भीर्य नहि छलनि, निजी देवताक धारणा केर बोध हुनका बड देरी सँ भेलनि । जीवनक सांध्य बेला में, खास कए पत्नीक देहावासानक बाद किछु अंश धरि चटर्जी कैँ भावुक देखल गेल चटर्जीक चेतना प्रत्यक्षवाद (agnosticism) केर बेढ टपबा ले उताहुल भेल ।

1. मूल बंगला
2. कहबीः तान नष्टम् यान न दीयते
3. हेड पण्डित मोशाय
4. मणि काका, खंड-2

Indian Institute of Advanced Study
117170
10/12/04
SHIMLA

सुनीति कुमार चटर्जीक स्तरक विद्वान सभ दू प्रकारक होइत छथि। एक टा प्रकार भेलाह वाल्मिकि, मुनि। दोसर प्रकार भेलाह च्यवन ऋषि। प्राचीन महात्मा लोकनिक मुनि आ ऋषि दूनूक सौरभ सुनीति कुमार चटर्जीक व्यक्तित्व मे समाहित छल।

डॉ. सुकुमार सेने के एहि महान् विद्वान सँ पचपन सालक परिचय छालनि। पहिने छात्र, तखन विश्वविद्यालय मे हुनक सहकर्मी। आचार्य सुनीतिकुमारक विषय मे ओ निष्पक्ष सर्वेक्षक वा कार्यालयी रिपोर्टर जकाँ नहि लिखने छथि। ओ लिखने छथि छात्रक रूप मे जनिका गुरू सँ प्रेम छनि। महान् विद्वानक आवरण मे झाँपल असल व्यक्तिक मादे लिखने छथि।

Library IIAS, Shimla
MT 415.092 C 392 S
00117170

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00